श्री राज

किसी पत्रिका में एक बार लिखा था, 'राजते स्वयं प्रकाशते यः सः राज' अर्थात् जो स्वयं प्रकाशमान है उसके प्रकाश से सारा ब्रह्माण्ड प्रकाशित है, उन्हें श्रीराज कहते हैं। यह प्रकाश सूर्य या चन्द्रमा का न होकर ज्ञान का प्रकाश है और यह मारफत का सूर्य है-'श्री कुलजम स्वरूप साहिब जी' का सम्पूर्ण ज्ञान। संसार के सूर्य के प्रकाश के साथ ही साथ माया की गतिविधियां, दिनचर्या और हाय तौबा के रूप में दिखती हैं। सारा दिन इसी भागदौड़ में लगाने के बाद थककर रात्रि को घर लौट, खा पीकर सो जाते हैं। सोते समय फिर दूसरी सुबह की हल्की सी योजना बनाकर विश्राम करते हैं। यही सुबह, शाम, रात हमारी आयु को चाट रहे हैं। और हमारे जीवन को समाप्त कर रहे हैं।

काल न देखे इन फेरे, याही तिमिर के फन्द।
ए सूरज आंखों देखिए, पर याही फंद के बंध।। *कलस १/१७*

यहां अज्ञानता का इतना अंधकार है कि माया के चक्कर में लोंगों को अपना काल भी दिखाई नहीं पड़ता। सूर्य के उदय होने के साथ-साथ ही माया के बन्धन बढ़ते जाते हैं परन्तु जब ज्ञान की रोशनी में इस स्थिति को देखा जाता है तो गहन अंधकार के अतिरिक्त और कुछ भी नजर नहीं आता। न यहां कोई रस है, न नवीनता और न ही विविधता। यदि दूरदर्शन की झूठी कहानियों को और विज्ञापनों को नवीनता का पर्याय कहा जाये तो हमारी बहुत बड़ी भूल होगी। हर टी. वी. सीरियल के पहले लिखा होता है कि इसके पात्र, स्थान और घटनाएं काल्पनिक हैं और सत्य के साथ इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। दूसरे शब्दों में यह सब पूर्णतया झूठ है, झूठे घर, झूठे पति, झूठे बच्चे, झूठे परिवार सब डायरेक्टर की कलाबाजी या व्यापारिक बुद्धि और देखने वालों की स्वप्न की बुद्धि जो इस झूठ को देखकर बहुमूल्य जीवन के कीमती समय को यूं ही व्यर्थ करते हैं। हमसे तो इसमें काम करने वाले कलाकार ज्यादा मुनाफे में रहते हैं। जो इसको अपनी जीविका का साधन तो बनाये हुए हैं और अपने समय की भारी कीमत वसूल करते हैं और साथ ही साथ शोहरत भी पाते हैं। यह प्रश्न अब हमको अपने स्वयं से करना है कि हमने क्या पाया, और क्या खोया? इस प्रश्न का उत्तर यदि हमें आज नहीं मिलता तो जीवन व्यतीत हो जाने के बाद, जब आखिरी सफर पर निकलते हैं तो चारों ओर यही ध्वनि होती है 'राज श्यामा जी सत्य है, राज श्यामा जी सत्य' है। यह सत्य वचन मुर्दा तो नहीं सुन सकता, परन्तु कदाचित उसके जीव को ही सुनाये जाते हैं। तन में रहते उस जीव ने शरीर का अच्छा सदुपयोग नहीं किया, अब फिर न जाने कब इस मानव तन को पुनः प्राप्त करेंगे और पुनः पारब्रह्म को पहचानने का सुन्दर अवसर प्राप्त होगा। लौकिक धन-सम्पत्ति तो सब यहीं

Nijanand App

पुनः पारब्रह्म को पहचानने का सुन्दर अवसर प्राप्त होगा। लौकिक धन-सम्पत्ति तो सब यहीं छूट जाती है परन्तु पारलौकिक उपलब्धि हमारे जमा खाते में अवश्य जमा रहती है। यही कारण होता है कि कोई मनुष्य तो सारी आयु कर्मकांड, उपासना या हकीकत में लगा देता है और दूसरा इन सीढ़ियों को बहुत कम समय में पार करके मारफत (विज्ञान) में पहुंच जाता है।

ज्ञान जब हृदय में जब स्थाई स्थान बना लेता है और हमारे व्यवहार में, कर्मों में, रहने में, उठने-बैठने में, बोलने-चालने में दिखने लगता है तो यही स्थिति मारफत या विज्ञान की होती है। ज्ञान की दिव्य रोशनी में उसने इस झूठे खेल को भलीभांति पहचान लिया है। अब एक नई आत्मिक और वैज्ञानिक स्थिति का प्रादुर्भाव हुआ, खेल में खिलवत साक्षात् अनुभवों को प्राप्त होने लगी। परमधाम की गहरी बातें ज्ञान की नजर से नहीं बलिक दिल में अनुभव होने लगी।

जब याद आयो सुख अखण्ड, तब रहे न पिंड ब्रह्मांड।
जब चढ़े विकट घाटी प्रेम, तब चैन न रहे नेम।।

किरन्तन प्र०-१६ चौ०-२४

ज्ञान के बाद विज्ञान की स्थिति का प्रमाण 'सेवा पूजा' में निम्न भोग के रूप में भी इस प्रकार प्राप्त होता है:-

केशरबाई के मोहोल पधारे, चरण पखारो ले झारी।

आत्म का स्वरूप ही अपने धनी से कह रहा है कि आपका आगमन मेरे दिल में हो गया है और आप अपने असल मोहोल में विराजमान हो गये हो इसलिए अपने भाव भरे नयनों से आपके चरण कमलों की वन्दना करती हूं। आपके चरण कमल ही तो मेरा जीवन है और मेरा दिल आपका मोहोल, इस प्रकार दोनों मिलकर एक ही हो गये हैं।

नूर की चौकी मैं डारूं मन्दिर में, तापर श्यामा वर आये।

आपके आगमन से मेरा दिल एक मन्दिर बन गया है और उस मन्दिर में मैंने ज्ञान की चौकी डाल दी है अर्थात् अब अन्दर की सारी अज्ञानता समाप्त हो गई है और श्यामा महारानी के धनी स्वयं आ गये हैं। अब प्रसन्नता के साथ नये-नये भावों और विचारों का भोग बनाया जाता है। बाई साकुण्डल ईमान का स्वरूप और श्री इन्द्रावती प्रेम का स्वरूप लिये विद्यमान हैं क्योंकि ज्ञान और प्रेम एक दूसरे से अलग नही हैं। इस प्रकार चारों अन्तःकरण समर्पण, ईमान, ज्ञान और प्रेम से प्रकाशित हैं। अब बाकी के सुन्दरसाथ कैसे जुदा रह सकते हैं। सब परस्पर मिलकर चर्चा-अर्चा, कीर्तन, आरती, परिक्रमा और भोग लगाते हैं।

Nijanand App

ईमान, ज्ञान और प्रेम से प्रकाशित हैं।

सब सखियन मिल पान खवाये।

भोजन आरोगने के पश्चात् श्री राज जी चौकी से उठ कर विश्राम करने के लिए तखत पर आ गये हैं और साथ में श्री सतगुरु के स्वरूप में उनकी आतम दुलहिन श्यामा महारानी जी भी हैं।

उठ के जियावर आये तखत पर, श्री श्यामा जी संग सुहाये।

अब रूह के लिए न तो वो ज्ञान के पुंज पूर्ण पारब्रह्म हैं, न परमधाम में रहने वाले अक्षरातीत हैं, अब केवल धाम के धनी उसके दिल के मोहोल के राजा हैं, शहंशाह हैं, साहिब हैं और वो उनकी हर रजा में राजी हैं। अब उसे यह सत्य पूर्णतया समझ आ चुका है कि न तो वो पहले कुछ थी, और न अब कुछ है, बस अब हर समय दिल ही दिल में उनकी मेजबानी करनी है:-

आये श्री राज-श्यामा जी मिलके, क्या मेजबानी कीजे।
दीन दुनी सब इस जगत के, रूह कुरबानी कीजै।।

भोग-सेवा पूजा

नीरू खुराना, कानपुर

परमेश्वर को पाने के लिए माया रूपी जाल से छूटना होगा

कपूरथला, २७ अक्टूबर (गुप्ता) : जालंधर के दीनदयाल उपाध्याय नगर में निजानन्द सम्प्रदाय द्वारा आयोजित ब्रम्हाज्ञान गोष्ठी सत्संग में कपूरथला से भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इस अवसर पर अन्यों के अतिरिक्त कपूरथला के सुरेन्द्र कुमार अरोड़ा, के. जी. गांधी एडवोकेट और जालंधर के कुलदीप भगत, प्रोफेसर कुमारी सोनिया अरोड़ा व कुमारी लवली आदि उपस्थित थे। प्रोफेसर कुमारी सोनिया अरोड़ा ने कहा कि पार ब्रम्ह परमेश्वर अर्थात श्री राज जी महाराज अक्षरांतीत पूर्ण ब्रम्ह सच्चिदानन्द को पाने के लिए हमें इस मोहमाया रूपी जाल से छूटना होगा। उसके ध्यान में अपने आप को लीन करना होगा। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार नींद टूटने पर सभी स्वप्न टूट जाते हैं और स्वप्न का संसार झूठा प्रतीत होता है ठीक उसी प्रकार काल माया के ब्रम्हाण्ड में जो हम जाग्रत अवस्था में हैं, यह भी एक प्रकार का स्वप्न ही है। जब हम असल जागृत अवस्था में पहुंचेगे तो हमें यह माया जाल रूपी संसार भी झूठा प्रतीत होगा।

Nijanand App